शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की बैंकों द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन

माया बकोरिया (शोधार्थी)
वाणिज्य अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
डॉ.पी.के.सनसे (प्राध्यापक)
भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू
डॉ.प्रीति सिंह (विभागाध्यक्ष)
वाणिज्य अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

देश की अर्थव्यवस्था में लघु एवं मध्यम उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए लघु एवं मध्यम उद्योगों को बैंकों के द्वारा आसान व कम शर्तों पर ऋण उपलब्ध करके प्रोत्साहित किया जाता है। परंतु यदि बैंकों के द्वारा इन लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण की वसूली समय पर नहीं हो पाती है तो यह बैंकों के लिए गैरनिष्पादित सम्पत्तियाँ बन जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन किया गया है। यह ज्ञात किया गया है कि सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के बैंकों में से किन में गैरनिष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं तथा जिन क्षेत्र के बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं, उन्हें आवश्यक सुझाव दिए गए हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति मध्यप्रदेश की वेबसाईट से प्राप्त द्वितीयक समंकों पर आधारित है। इस शोध पत्र में मध्यप्रदेश में कार्यरत 21 सार्वजनिक बैंकों 6 एसबीआई ग्रुप की बैंकों एवं 19 निजी बैंकों के 5 वर्षों (2011-12 से 2015-16) की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का अध्ययन प्रवृत्ति विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण एवं विचरण गुणक विश्लेषण के माध्यम से किया गया है।

मुख्य बिंदु : *सार्वजनिक-निजी, बैंक, लघु-मध्यम उद्योग, ऋण, गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ*

प्रस्तावना

बैंकिंग प्रणाली किसी भी विकासशील देश की अर्थव्यवस्था के विकास का केंद्र बिन्दु होती है। बैंकों के द्वारा वित्तीय मध्यस्थता एवं भुगतान प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जाती है। इसीलिए देश की अर्थव्यवस्था में बैंकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। बैंकिंग संस्थाओं ने अपनी शाखाओं और जमा एवं

अग्रिम जैसे कार्यों के द्वारा मुद्रा बाजार में अपनी विशेष जगह बना ली है। बैंकों का प्रमुख कार्य उधार देना एवं जमा स्वीकार करना होता है। बैंकों के द्वारा उधार दी गयी राशि एवं उसका ब्याज यदि समय पर प्राप्त नहीं होता है तो वह गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ कहलाती है।

शोध साहित्य की समीक्षा

रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया द्वारा दी गई गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की परिभाषा :

कोई भी सम्पत्ति गैर-निष्पादित सम्पत्ति तब मानी जाती है जब वह बैंक के लिए आय उत्पन्न करना बंद कर देती है। गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ वह ऋण है जिसके ब्याज या मूलधन की किस्त किसी विशिष्ट अवधि के लिए 'गत देय' हो गई हो।

कोई भी सम्पत्ति गैर-निष्पादित सम्पत्ति तब मानी जाएगी जब

किसी मियादी ऋण के सम्बन्ध में ब्याज या मूलधन की किस्त 90 से अधिक दिनों के लिए 'अति देय' हो गई हो।

ओवर ड्राफ्ट/नकदी ऋण (ओडी/सीसी) के संबंध में खाता 90 से अधिक दिनों के लिए 'आउट ऑफ़ आर्डर' रहा हो।

खरीदे एवं भुनाए गए बिलों के मामले में बिल 90 से अधिक दिनों के लिए 'अति देय' रहा हो।

'अल्पकालीन फसलों' के लिए दिया गया ऋण तब गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ माना जाएगा. जब मूलधन की क़िस्त या उस पर ब्याज दो 'फसली मौसम' के लिए 'अति देय' हो गई हो।

'दीर्घकालीन फसलों' के लिए दिया गया ऋण तब गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ माना जाएगा जब मूलधन की क़िस्त या उस पर ब्याज एक फसली मौसम के लिए 'अति देय' हो गई हो।

सम्पत्तियों का वर्गीकरण

रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया के द्वारा गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को तीन भागों में विभक्त गया है :

अवमानक सम्पत्ति

31 मार्च 2005 से किसी सम्पत्ति को तब अवमानक सम्पत्ति माना जाएगा यदि वह 12 महीने या उससे कम समय के लिए अनर्जक सम्पत्ति के रूप में रही हो। ऐसी सम्पत्ति में ऋण कमजोरी निहित होती है जो ऋण की वसूली को खतरे में डाल देती है और यदि ऋण में निहित कमजोरी को सही समय पर ठीक नहीं किया जाय तो बैंकों को घाटा उठाना पड़ सकता है।

संदिग्ध सम्पत्ति

31 मार्च 2005 से किसी सम्पत्ति को संदिग्ध के रूप में तभी वर्गीकृत किया जाता है जब वह 12 माह तक अनर्जक सम्पत्ति रही हो। संदिग्ध सम्पत्तियों में वे सभी कमजोरी निहित होती है जो अवमानक सम्पत्ति में होती है। संदिग्ध सम्पत्ति की विशिष्ट बात यह होती है कि इस प्रकार की सम्पत्ति के बारे में ज्ञात तथ्य तथा शर्तें इतनी कम होती है कि ये सम्पूर्ण वसूली को संदेहात्मक बना देती है।

हानि सम्पत्तियाँ

हानि सम्पत्ति वह है जहाँ हानि बैंक द्वारा, आंतरिक या बाहरी लेखा परीक्षकों द्वारा, सहकारिता विभाग द्वारा या रिर्जव बैंक के द्वारा पहचान ली गई हो परंतु हानि की पूरी राशि को अपलिखित नहीं किया

गया हो। अन्य शब्दों में हानि सम्पत्ति वह है जिसकी वसूली नहीं की जा सकती हो और अगर वसूली की भी जाती है तो इतनी कम राशि प्राप्त होती है कि उसके बैंक योग्य सम्पत्ति के रूप में रखने का कोई औचित्य न हो भले उसका वसूली मूल्य या निस्तारक मूल्य हो।

बैकिंग क्षेत्र में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों से सम्बन्धित अभी तक किए शोध कार्य निम्न हैं:-

क्र.	वर्ष	लेखक	विषय
1	2014	संथान कृष्णन	भारतीय स्टेट बैंक के विषेष सन्दर्भ के साथ भारत में बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों पर एक अध्ययन
2	2014	मनीष बी. रावल	भारत में राष्ट्रीकृत बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का विष्लेषणात्मक अध्ययन
3	2013	चिराग पी.सूरती	भारत में चयनित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों और पूँजी पर्याप्तताका प्रबन्धन
4	2013	आशा सिंह	भारतीय वाणिज्यिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रदर्षन
5	2013	भूपेन्द्र सिंह	भारतीय बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ
6	2012	भारती शाह	म.प्र. में सार्वजनिक बैंकों द्वारा प्रदत्त षिक्षा ऋण की प्रभावषीलता का अध्ययन
7	2010	बाबुराव मारूती	बीड जिले में शहरी सहकारी बैंकों की वित्तीय प्रदर्षन और गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का एक मूल्यांकन
8	2009	सी.आर.रेडडी	गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के सन्दर्भ में वाणिज्यिक बैंकों के सुधार
9	2009	पी.एल.अन्नती	भारतीय बैंकिंग उद्योग में गैर-निष्पादित सम्पत्ति
10	2007	हेमलता जोशी	वाणिज्यिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्ति-हुबली धखाड़ का एक अध्ययन

इन शोध-पत्रों में वाणिज्यिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्ति का अध्ययन, भारतीय बैंकिंग उद्योग में गैर-निष्पादित सम्पत्ति का अध्ययन, राष्ट्रीकृत बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन को मध्यप्रदेश की सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों सीमित रखा गया है। अंत में मध्यप्रदेश की बैकों को गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के सम्बन्ध में सुझाव दिए गए हैं।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना यह है कि निजी क्षेत्र के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण का अध्ययन करना।
मध्यप्रदेश में निजी बैकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण का अध्ययन करना।
मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्ति की स्थिति का अध्ययन करना।
मध्यप्रदेश में निजी बैकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्ति की स्थिति का अध्ययन करना।
शोध परिकल्पना का परीक्षण करना।
प्रस्तुत शोध में ज्ञात समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध-पत्र में मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों एवं निजी बैकों के द्वारा वर्ष 2011-12 से 2015-16 तक लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध-पत्र की प्रविधि संगणना प्रविधि है। यह शोध-पत्र पूर्णतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है। इन समंकों को राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति, रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया की साईट, पत्रिकाओं एवं बैंकिंग विषय पर पूर्व में किये गये शोध-पत्रों से लिया गया है। यह शोध कार्य मध्यप्रदेश में कार्यरत सार्वजनिक बैंक एवं निजी बैंकों के 5 वर्षों 2011-12 से 2015-16 के राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति मध्यप्रदेश से प्राप्त समंकों के आधार पर निरपेक्ष विश्लेषण में प्रवृत्ति विश्लेषण, सापेक्ष विश्लेषण में अनुपात विश्लेषण एवं सांख्यिकी विश्लेषण में विचरण गुणक के आधार पर किया गया है।

विश्लेषण

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की बैंकों के द्वारा दिए गए लघु एवं मध्यम उद्योगों के ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति को ज्ञात करने के लिए निरपेक्ष विश्लेषण के अंतर्गत प्रवृत्ति विश्लेषण, सापेक्ष विश्लेषण में अनुपात विश्लेषण तथा सांख्यिकी विश्लेषण के अंतर्गत विचरण गुणक के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

निरपेक्ष विश्लेषण

निरपेक्ष विश्लेषण के अंतर्गत प्रवृत्ति विश्लेषण द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण एवं लघु एवं मध्यम उद्योगों के ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के घटने एवं बढ़ने की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

सार्वजनिक बैंकों एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रवृत्ति विश्लेषण :

क्र.	वर्ष	लघु एवं मध्यम उद्योग ऋण	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि		गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि	
				राशि	प्रतिशत			राशि	प्रतिशत
1	2011-12	1126453	100	0	0	205505	100	0	0

शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

2	2012-13	1441792	127.99	315339	27.99	72417	35.24	-133088	-64.76
3	2013-14	1758258	156.09	316466	21.95	114460	55.70	42043	58.06
4	2014-15	2100566	186.48	342308	19.47	167170	81.35	52710	46.05
5	2015-16	2339753	207.71	239187	11.39	141958	69.08	-25212	-15.08

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त सार्वजनिक बैंकों के द्वारा वर्ष 2015-2016 में सबसे अधिक लघु एवं मध्यम उद्योगों को ऋण दिया गया है जिसकी प्रवृत्ति 207.71 है, परंतु सभी सार्वजनिक बैंकों की कुल गैरनिष्पादित सम्पत्तियाँ वर्ष 2011-2012 में सबसे अधिक है जिसकी प्रवृत्ति 100.00 है।

निजी बैंकों एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रवृत्ति विश्लेषण

क्र.	वर्ष	लघु एवं मध्यम उद्योग ऋण	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि		गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि	
				राशि	प्रतिशत			राशि	प्रतिशत
1	2011-12	184400	100	0	0	1632	100	0	0
2	2012-13	280955	152.36	96555	52.36	5716	350.25	4084	250.25
3	2013-14	476675	258.50	195720	69.66	8158	499.88	2442	42.72
4	2014-15	493558	267.66	16883	3.54	8035	492.34	-123	-1.51
5	2015-16	575075	311.86	81517	16.52	7138	437.38	-897	-11.16

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त निजी बैंकों के द्वारा वर्ष 2015-2016 में सबसे अधिक लघु एवं मध्यम उद्योगों को ऋण दिया गया है जिसकी प्रवृत्ति 311.86 है एवं सभी निजी बैंकों की कुल गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ भी वर्ष 2013-14 में सबसे अधिक है जिसकी प्रवृत्ति 499.88 है।

सापेक्ष विश्लेषण

सापेक्ष विश्लेषण में प्रति 100 रुपये के ऋण पर गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रतिशत निकाला गया है :

गैर-निष्पादित सम्पत्तियांx100

ऋण

क्र.	बैंकों के नाम	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	कुल अनुपात	औसत अनुपात
1	इलाहाबाद बैंक	5.72	6.32	4.87	4.27	12.52	33.70	6.74
2	आंध्रा बैंक	0.04	0.03	0.03	15.40	760.29	775.79	155.16
3	बैंक ऑफ़ बड़ौदा	1.34	2.59	5.35	4.65	3.68	17.63	3.53
4	बैंक ऑफ़ इण्डिया	3.00	2.04	2.81	5.18	13.04	26.07	5.21
5	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र	9.57	2.97	2.43	6.70	7.73	29.41	5.88
6	केनरा बैंक	4.48	5.99	8.79	5.89	8.02	33.18	6.64
7	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया	6.94	3.64	8.93	5.57	8.01	33.09	6.62
8	कारपोरेशन बैंक	4.43	2.83	1.95	1.78	0.03	11.02	2.20
9	देना बैंक	4.85	5.65	4.76	10.81	8.81	34.88	6.98

E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2018

10	आईडीबीआई बैंक	7.41	7.41	13.63	5.70	4.19	38.34	7.67
11	इंडियन बैंक	0.96	0.86	0.79	0.00	6.70	9.31	1.86
12	इंडियन ओवरसीज बैंक	4.96	2.43	35.48	137.66	11.62	192.15	38.43
13	ओरिएंटल बैंक ऑफ़ कॉमर्स	7.87	5.24	7.07	4.13	3.65	27.95	5.59
14	पंजाब एण्ड सिंध बैंक	4.91	3.90	20.02	5.17	3.04	37.03	7.41
15	पंजाब नेशनल बैंक	5.81	5.00	10.74	11.12	2.30	34.97	6.99
16	सिंडिकेट बैंक	17.53	11.82	7.77	11.98	25.53	74.62	14.92
17	यूको बैंक	3.73	3.55	3.33	6.10	7.75	24.47	4.89
18	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया	13.11	8.34	7.50	6.36	0.00	35.31	7.06
19	यूनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया	0.08	0.63	2.81	0.14	0.00	3.66	0.73
20	विजया बैंक	1.72	2.84	2.23	1.30	0.00	8.10	1.62
21	भारतीय महिला बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
	कुल वाणिज्यिक बैंक	5.74	4.26	6.77	7.66	6.48	30.90	6.18
22	स्टेट बैंक आॅफ हैदराबाद	3554.02	42.02	44.15	44.15	0.00	3684.35	736.87
23	स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर	3.62	3.62	4.78	173.71	0.00	185.73	37.15
24	स्टेट बैंक ऑफ़ पटियाला	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
25	स्टेट बैंक ऑफ़ ट्रावनकोर	0.11	0.03	0.04	0.00	0.00	0.17	0.03
26	स्टेट बैंक ऑफ़ जयपुर	12.36	6.54	6.54	6.54	0.00	31.99	6.40
27	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	7.34	7.65	5.24	3.52	3.29	27.05	5.41
	कुल एसबीआई ग्रुप	49.19	7.69	5.43	9.54	3.29	75.14	15.03
	कुल सार्वजनिक क्षेत्र बैंक	18.24	5.02	6.51	7.96	6.07	43.80	8.76
28	एचडीएफसी बैंक	0.90	0.59	1.91	1.02	1.75	6.18	1.24
29	आईसीआईसीआई बैंक	0.51	6.16	3.38	2.82	1.02	13.89	2.78
30	इंडसइंड बैंक लिमिटेड	0.23	0.42	0.47	33.14	0.00	34.26	6.85
31	आईएनजी वैश्य	1.08	1.08	1.08	0.00	0.00	3.25	0.65

32	कर्नाटक बैंक लिमिटेड	0.00	0.13	0.04	0.81	0.00	0.99	0.20
33	लक्ष्मी विलास बैंक लिमिटेड	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
34	फेडरल बैंक लिमिटेड	0.00	0.00	1.51	47.26	0.00	48.77	9.75
35	जम्मू एण्ड कश्मीर बैंक	11.46	11.82	11.82	0.00	0.00	35.11	7.02
36	करूर वैश्य बैंक	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
37	साउथ इंडियन बैंक	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
38	ऐक्सिस बैंक	2.44	1.63	0.24	0.40	0.57	5.28	1.06
39	सिटी यूनियन बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
40	धन लक्ष्मी बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
41	कोटक महिंद्रा बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
42	रत्नाकर बैंक	-	-	-	0.13	0.00	0.00	0.00
43	यस बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
44	स्टैण्डर्ड चार्टर्ड बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
45	सिटी बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
46	बंधन बैंक	-	-	-	0.00	0.00	0.00	0.00
	कुल निजी बैंक	0.89	2.03	1.71	1.63	1.24	7.50	1.50

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक बैंकों में वर्ष 2011-2012 में प्रति 100 रुपये के लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण पर अन्य वर्षों की तुलना में 18.24 रुपये सबसे अधिक गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ है तथा निजी बैंकों में वर्ष 2012-2013 में प्रति 100 रुपये के लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण पर अन्य वर्षों की तुलना में 2.03 रुपये सबसे अधिक गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ हैं।

परंतु यदि सार्वजनिक बैंकों एवं निजी बैंकों की तुलना की जाए तो तुलनात्मक वर्ष2011-12 से 2015-16 के पाँच वर्षों के कुल प्रति 100 रुपये के लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋण पर सार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ 43.80 रुपये है एवं निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ 7.50 रुपये ही है। अतः उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक वर्ष 2011-12 से 2015-16 के पाँच वर्षों में सार्वजनिक बैंकों की तुलना में निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ कम है।

सांख्यिकी विश्लेषण

सांख्यिकी विश्लेषण के अंतर्गत समंकों में परिवर्तनशीलता कितनी है यह ज्ञात करने के लिए विचरण गुणक का प्रयोग किया गया है:-

सार्वजनिक बैंकों एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का विष्लेषण:-

क्र.	वर्ष	लघु एवं मध्यम उद्योग ऋण (x)	(x- Mean) (x-1753364) Dx	Dx^2	गैर निष्पादित संपत्तियां (x)	(x- Mean) **(x-140302)** Dx	Dx^2
1	2011-12	1126453	-626911	393017401921	205505	65203	4251431209

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2018

2	2012-13	1441792	-311572	97077111184	72417	-67885	4608373225
3	2013-14	1758258	4894	23951236	114460	-25842	667808964
4	2014-15	2100566	347202	1.20549E+11	167170	26868	721889424
5	2015-16	2339753	586389	3.43852E+11	141958	1656	2742336
	dy		954519752466			10252245158	
Standard Deviation			$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{954519752466/5}$ $SD = \sqrt{1.90904E+11}$ SD = 436925.5663			$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{10252245158/5}$ $SD = \sqrt{2050449032}$ SD = 45281.88414	
Co-Efficient of Variation			$CV = \frac{SD}{Mean}$ X 100 $CV = \frac{436925.5663}{1753364}$ X 100 CV = 24.91926757			$CV = \frac{SD}{Mean}$ X 100 $CV = \frac{45281.88414}{140302}$ X 100 CV = 32.27458208	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 24.92 है तथा सार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 32.27 है। अतः सार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ में लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों की तुलना में परिवर्तनशीलता अधिक है।

निजी बैंकों एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का विश्लेषण :

क्र.	वर्ष	लघु एवं मध्यम उद्योग ऋण (x)	(x-Mean) (x-1753364) Dx	Dx^2	गैर निष्पादित संपत्तियां (x)	(x- Mean) (**x-**140302**)** Dx	Dx^2
1	2011-12	184400	-217733	47407659289	1632	-4504	20286016
2	2012-13	280955	-121178	14684107684	5716	-420	176400
3	2013-14	476675	74542	5556509764	8158	2022	4088484
4	2014-15	493558	91425	8358530625	8035	1899	3606201
5	2015-16	575075	172942	29908935364	7138	1002	1004004
	कुल			105915742726			29161105
Standard Deviation		$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{105915742726/5}$ $SD = \sqrt{21183148545}$				$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{29161105/5}$ $SD = \sqrt{5832221}$	

	SD = 145544.3181	SD = 2414.999172
Co-Efficient of Variation	$CV = \frac{SD}{Mean} X\ 100$ $CV = \frac{145544.3181}{402133} X\ 100$ CV = 36.19311594	$CV = \frac{SD}{Mean} X\ 100$ $CV = \frac{2414.999172}{6136} X\ 100$ CV = 39.35915727

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि निजी बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 36.19 है तथा निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 39.36 है। अतः निजी बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की तुलना में लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में परिवर्तनशीलता कम है।

सुझाव

इस शोध पत्र से ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में सार्वजनिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं। अतः हमारे द्वारा मध्यप्रदेश की सार्वजनिक बैंकों को दिए गए सुझाव निम्न हैं :

सार्वजनिक बैंकों को ऋण प्रदान करने के मौके तलाशने के बजाय ऋणों की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

सार्वजनिक बैंकों को ऋण प्रदान करते समय जिस कारोबार के लिए ऋण प्रदान किया जा रहा है उसके जोखिमों का मूल्यांकन करने के बाद ही ऋण की स्वीकृति प्रदान करना चाहिए।

सार्वजनिक बैंकों को ऋण की स्वीकृति देने से पूर्व ऋणी एवं व्यवसाय के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए।

जब भी ऋण प्रदान करे तो बैकों के प्रशासन अधिकारियों के द्वारा दस्तावेजों की पूर्णता के सम्बन्ध में पूरी चैकसी बरतनी चाहिए।

लघु एवं मध्यम उद्योगों को ऋण की स्वीकृति देने से पूर्व अधिकारी एवं कर्मचारी लक्ष्य परियोजना का दौरा करें एवं अपने उच्च अधिकारियों से विचार-विमर्श कर लें।

निष्कर्ष

गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ न सिर्फ बैकिंग क्षेत्र का अपितु गैर-बैंकिंग क्षेत्र की गंभीर समस्या है। इस समस्या के निराकरण के लिये न सिर्फ बैंकिंग संस्थाओं के द्वारा अपितु शोध कार्य से जुड़ी संस्थाओं और शोधार्थियों के द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के प्रकार का अध्ययन किया गया है एवं सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के बैंकों में से किन में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं तथा जिन क्षेत्र के बैंकों कीगैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं, उन्हें आवश्यक सुझाव दिए गए हैं।

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में किन मे गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं तथा हमारे इस शोध पत्र से ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक एवं निजी बैंकों के द्वारा लघु एवं मध्यम

उद्योगों को दिए गए ऋणों मे सार्वजनिक बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं। अतः अंत में हमारे शोध पत्र की परिकल्पना निजी क्षेत्र के द्वारा लघु एवं मध्यम उद्योगों को दिए गए ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ अधिक हैं गलत सिद्ध हो गयी है।

सन्दर्भ ग्रंथ

बैंकिंग सिस्टम इन इडिंयाःएस.एम. जावेद अखतर एवं मो. साब्बिर आलम-न्यु सेन्चुरी पब्लिकेशन
प्रेक्टिकल अप्रोच टु एनपीए मैनेजमेंटःआरसी कोहली-टेक्समन पब्लिकेशन प्रायवेट लिमिटेड
रिसर्च मेथोडोलोजी-वेयने गोडडास-जुटा ऐकेडमिक पब्लिकेशन
बैंकिंग फ्राटियर मैगज़ीन
www.dif.mp.gov.in
www.slbcmadhyapradesh.in
http://www.scmpune.ac.in
http://dyuthi.cusat.ac.in
www.indusedu.org
www.pbr.co.in